मनोज
कॉमिक्स
संख्या 656 मूल्य 6.00
जलमहल
की कैदी

मनोज कॉमिक्स

के आगामी नये सैट की पुस्तकें

क्रुकबाण्ड और मौत का फरिश्ता

मॉडर्न जासूस क्रुकबाण्ड का हसा-हंसाकर लोटपोट कर देने वाला कॉमिक्स

- अंकल चार्ली और भतीजा डोडो
- आग ही आग
- हवलदार बहादुर और काले जल्लाद
- पानी का सौदागर
- मौत की चोरी
- चाँडाल चौकड़ी का अन्त
- मौत का जन्मदाता

इसी सैट की पुस्तकें

मॉडर्न जासूस क्रुकबाण्ड का हंसा-हंसाकर लोटपोट कर देने वाला कॉमिक्स

- क्रुकबाण्ड और कलियुग का धर्मराज
- नीली रोशनी का रहस्य
- रेगिस्तानी हत्यारे
- हवलदार बहादुर और करामाती बकरा
- कातिल मक्खियाँ
- खूनी लुटेरे
- बदनसीब राजकुमारी और बदसूरत राजकुमार
- जलमहल की कैदी

प्रकाशक: मनोज पॉकेट बुक्स, 1584, दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006 वितरक: राजा सेल्स कॉरपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

जलमहल की कैदी

चित्रकार :
विजय पंडित
लेखक :
विजयकुमार वत्स

दोनों कौतुहल में डूबे अपने ऊपर उड़ती चीलों के झुंड को अभी देख ही रहे थे कि—
क्वां... क्वां... क्वां
अरे! वो चील तो हमारी ही ओर आ रही है?
अरे!

अगले ही पल—
अरे!
ओह!
चील कमल के फूल को चोंच में दबाए वहां से दूर उड़ गई और शीघ्र ही चीलों के झुंड में आ मिली।

यह देखकर—
यह क्या हुआ महाराज? चील हमारे हाथ में से कमल का फूल क्यों ले गई?
महारानी, पहले हमें केवल शक था कि इन चीलों का इस प्रकार लगातार हमारे ऊपर उड़ते रहने में कोई रहस्य है, लेकिन अब वही शक विश्वास में बदल गया है...

...चील द्वारा इस प्रकार कमल के फूल छीनकर ले जाने के पीछे अवश्य ही कोई भेद छिपा हुआ है, लेकिन वह क्या भेद हो सकता है? यह हमारी समझ में नहीं आ रहा है?
मृत्युंजय और दुर्गावती सोच में पड़ गए। दूसरी ओर चीलों का झुंड आकाश में उड़ता हुआ बादलों में विलीन हो गया।

बहुत सोचने पर भी जब मृत्युंजय की समझ में कुछ नहीं आया तो महारानी दुर्गावती ने कहा—
महाराज! धर्मगुरू चक्रपाणी बहुत अनुभवी व विद्वान हैं। मेरा विश्वास है, वे चीलों के इस प्रकार उड़ने व कमल के फूल छीनकर ले जाने के विषय में हमारी शंका का अवश्य समाधान कर देंगे।
तुमने ठीक कहा महारानी, हम अभी महल में जाकर उनसे इस विषय में पूछते हैं।
मृत्युंजय उसी समय उद्यान से अपने महल में वापस लौट आया।

महल में पहुंचकर उसने धर्मगुरु चक्रपाणी को उड़ती हुई चीलों के बारे में विस्तारपूर्वक सारी बात बताई। उससे सारी बात जानकर धर्मगुरु ने परेशान होते हुए कहा–
ओह! तो पचास-पचपन वर्ष पूर्व घटी घटना की आज फिर पुनरावृत्ति हुई है?
क्या मतलब धर्मगुरु? पचास-पचपन वर्ष वह कौन-सी घटना घटी थी, जिसकी आज पुनरावृत्ति हुई है धर्मगुरु। मुझे विस्तार से इस विषय में बताइये।

सुनकर धर्मगुरु कुछ सोचते रहे, तत्पश्चात्–
महाराज, मैं जानता हूं कि आपके मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हो उठी है कि काली चीलों के इस प्रकार उड़ने और उनके द्वारा महारानी के हाथ में पकड़े कमल के फूल छीनकर ले जाने में क्या रहस्य छिपा हुआ है...

... महाराज, आप इस विषय में विस्तार से न ही पूछें तो ठीक है। बस इतना जान लीजिए कि इन चीलों का प्रकट होना और कमल के फूल को छीन कर चले जाना अशुभ है।
धर्मगुरु, आपकी बातों ने तो मेरे मन में उत्पन्न जिज्ञासा को और भी भड़का दिया है...

... मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझसे कुछ छिपाये नहीं और मुझे विस्तारपूर्वक सबकुछ बतायें, ताकि मेरी शंका का समाधान हो और मेरी जिज्ञासा शांत हो सके।

मृत्युंजय के बार-बार अनुरोध करने पर अंत में धर्मगुरु ने उससे कहा–
ठीक है महाराज, जब आप के मन में सबकुछ जानने की इतनी तीव्र उत्कंठा है तो मैं आपसे अब कुछ नहीं छिपाऊंगा।
इतना कहकर धर्मगुरु चुप से हो गए...

...फिर कुध देव उन्होंने कहना प्रारम्भ कर दिया-
महाराज! यह घटना, जो मैं आपको सुनाने जा रहा हूं, यह आपके जन्म से भी पहले की घटना है। तब हरिनगर राज्य पर आपके स्वर्गीय पिता महाराज दिग्विजय सिंह राज करते थे। महाराज दिग्विजय सिंह की एक युवा बहन थी राज-कुमारी चंद्रलेखा...

...एक बार संध्या के समय जब राज-कुमारी चंद्रलेखा राजमहल के राजउद्यान में विहार कर रही थी...
कितना सुन्दर कमल का फूल खिला हुआ है! इसे तो तोड़ कर वेनी में गूंथना चाहिए।

...राजकुमारी चंद्रलेखा जैसे ही फूल तोड़ने को नीचे झुकी, न जाने कैसे उसका पांव फिसला और...
आह... बचा... ओ...।
...राजकुमारी चंद्रलेखा छपाक से सरोवर में गिर पड़ी...

...वहां पास में ही माली रामदीन का बेटा शामदीन उद्यान में पौधे लगाने का कार्य कर रहा था। राजकुमारी चंद्रलेखा की पुकार सुन-कर वह दौड़ा-दौड़ा सरोवर के तट पर आया...
बचाओ!
ओह, यह तो राजकुमारी चंद्रलेखा है। राजकुमारी को बचाने के लिए बिना एक पल गंवाए सरोवर में कूद जाना चाहिए।

...श्यामदीन ने आव देखा न ताव और अगले ही पल...
घबराइये नहीं राजकुमारी जी, मैं आ रहा हूं।
छपाक

...श्यामदीन तैरता हुआ शीघ्र ही राजकुमारी चंद्रलेखा के पास जा पहुंचा...

...और उसकी बांह पकड़कर वापस तट की ओर लौट पड़ा...

...जब तट पर पहुंचकर उसने राजकुमारी चंद्रलेखा को पृथ्वी पर लिटाया...
सरोवर का पानी पेट में चले जाने के कारण राजकुमारी जी बेहोश हो गई हैं। इन्हें औंधा लिटाकर मुझे इन्हें होश में लाने का प्रयत्न करना चाहिए।

...श्यामदीन ने ऐसा ही किया...
आ... क... आ... क...।

... तत्पश्चात् कुछ देर बाद ही राजकुमारी चंद्रलेखा कराही...
आह...ह...!
लगता है राजकुमारी जी होश में आ रही हैं।

...अगले ही पल उसने आंखें खोलीं...
मैं कहां हूं?
राजकुमारी जी, आप सरोवर में गिर गई थीं। मैं आपको सरोवर में से निकालकर लाया हूं। इस समय आप सरोवर के तट पर लेटी हुई हैं।

ओह! लेकिन तुम कौन हो?
मैं माली रामदीन का बेटा श्यामदीन हूं राजकुमारी जी।

श्यामदीन, तुमने अपनी जान पर खेलकर मेरी जान बचाई है। इसके लिए मैं तुम्हारी ऋणी हो गई हूं।
इसमें ऋणी कैसा होना राजकुमारी जी? यह तो मेरा फर्ज था। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई। आप सरोवर में गिरीं कैसे?

ओह, तो आप सरोवर में खिला कमल तोड़ना चाहती थीं?
मैं सरोवर में खिला कमल का फूल तोड़ने नीचे झुकी ही थी कि न जाने कैसे मेरा पांव फिसल गया और मैं धड़ाम से सरोवर में आ गिरी।
...कहकर श्यामदीन सरोवर की ओर वापस पलटा...

...अगले ही पल...
छपाक
अरे श्यामदीन, तुम सरोवर में क्यों कूद गये?

...चंद्रलेखा तट पर हतप्रभ-सी खड़ी रह गई और श्यामदीन तैरता हुआ सरोवर के बीच में उस स्थान पर पहुंचा, जहां बहुत बड़े-बड़े कमल खिले हुए थे...

...उसने एक बड़ा-सा कमल का फूल तोड़ा...
...कमल के उस फूल को लेकर तट की ओर लौट पड़ा...

...तट पर पहुंचकर उसने वह फूल चंद्रलेखा को देते हुए कहा...
लीजिए राजकुमारी जी, आपके लिए सरोवर में खिला सबसे बड़ा कमल तोड़कर लाया हूं।
ओह श्यामदीन, तुम तो बहुत ही निडर हो। एक फूल के लिए अपनी जान की परवाह न करके पुनः इस गहरे सरोवर में कूद गए।
...चंद्रलेखा ने उससे फूल ले लिया और उसे प्रशंसा भरी नजरों से देखने लगी...

...तभी अकस्मात ही आकाश में चीलों का झुंड उड़ता हुआ वहां आया...

...उनमें से एक चील राजकुमारी चंद्रलेखा की ओर झपटी...

...अगले ही पल चील ने चंद्रलेखा के हाथ में पकड़ा कमल का फूल चोंच में दबाया और...
अरे!
ओह! कमल का फूल तो चील ले गई।
...चील कमल का फूल चोंच में दबाए अपने झुंड में जा मिली। कुछ देर बाद ही चीलों का उड़ता हुआ झुंड बादलों में विलीन हो गया...

...यह देखकर...
राजकुमारी जी, उस चील को भी वह कमल का फूल बहुत पसन्द आया है।
शायद तुम ठीक कह रहे हो। तभी तो वह इस प्रकार फूल लेकर उड़ गई।

...तब श्यामदिन से विदा ले राजकुमारी चंद्रलेखा भीगे कपड़ों से ही महल में पहुंची। उसे इस अवस्था में देख महाराज दिग्विजय सिंह हैरान रह गये...
चंद्रलेखा, तुम इस अवस्था में?
भइया, मैं उद्यान में विहार करते समय सरोवर में गिर गई थी।
...फिर चन्द्रलेखा ने श्यामदीन द्वारा उसको बचाने की सम्पूर्ण घटना की जानकारी राजा दिग्विजय को दे दी...

...अन्त में उसने चील द्वारा कमल का फूल छीनकर ले जाने की घटना के बारे में भी दिग्विजय सिंह को बताया...
चंद्रलेखा, माली के लड़के ने तुम्हारी जान बचा ली, यह जानकर हमें खुशी हुई। लेकिन एक बात हमारी समझ में नहीं आई कि चील इस प्रकार तुम्हारे हाथ में से कमल का फूल क्यों लेकर भागी?
...दिग्विजय सिंह सोच में पड़ गए...

...बहुत सोचने पर भी जब उनकी समझ में कुछ न आया तो...
चंद्रलेखा, हम इस विषय में धर्मगुरू चक्रपाणी जी से विचार-विमर्श करेंगे। इस समय तुम जाओ और अपने कक्ष में जाकर भीगे कपड़ों को बदल लो।
जी भइया!
...यह कह कर चंद्रलेखा अपने कक्ष की ओर बढ़ गई...

...दिग्विजय सिंह ने उसी रात मुझे महल में बुलवाया और मुझे सारी बात बताई। तत्पश्चात्...
धर्मगुरु, काली चील राजकुमारी चंद्रलेखा के हाथ में से कमल का फूल छीनकर क्यों ले गई ? यह बात मेरी समझ में नहीं आई। क्या आप मेरी इस शंका का समाधान करेंगे ?
...राजा दिग्विजय की बात सुनकर मैं आंखें मूंदकर ध्यान में डूब गया...

...बहुत देर पश्चात् जब मैंने आंखें खोलीं...
राजन्, काली चील जिस प्रकार राजकुमारी चंद्रलेखा के हाथ से कमल का फूल छीनकर ले गई है, उससे यह सिद्ध होता है कि राजकुमारी चंद्रलेखा का विवाह किसी राजकुमार के साथ न होकर किसी साधारण युवक के साथ होने वाला है।
धर्मगुरु, यह आप क्या कह रहे हैं...

...हम राजसी कुल के हैं और हमारे कुल के लोगों का विवाह राजसी घरानों में ही होता है। फिर हम राजकुमारी चंद्रलेखा का विवाह किसी साधारण मनुष्य के साथ कैसे कर सकते हैं ?
राजन्, परिस्थितियां कह रही हैं कि ऐसा ही होने वाला है। अतः मेरी बात ध्यान से सुनिए...

...राजन्, कमल का फूल राजसी कुल का प्रतीक है और काली चील साधारण कुल का प्रतीक है। जिस प्रकार काली चील कमल के फूल को ले उड़ी है, उसी प्रकार राजकुमारी को भी कोई साधारण वर्ग का युवक शीघ्र ही विवाह करके अपने साथ ले जाएगा।
धर्मगुरु, यह हमारी आन-बान के खिलाफ है। हम ऐसा कदापि नहीं होने देंगे।

राजन्, होनी तो अब होकर ही रहेगी। उसे आप कैसे रोक सकते हैं ?
धर्मगुरु, हम होनी को अनहोनी में बदल देंगे।
यह असम्भव है। मेरी छठी इंद्रिय कहती है कि राजकुमारी के मन में किसी साधारण वर्ग के युवक के प्रति प्रेम के अंकुर फूट चुके हैं।
ठीक है धर्मगुरु! मैं कल प्रातः ही राजकुमारी चंद्रलेखा से इस विषय में वार्तालाप करूंगा। मेरा पक्का विश्वास है कि आपकी बात गलत निकलेगी।

...सुनकर मेरे होंठों पर हंसी खेल गई...
राजन्, मुझे खेद है, इस विषय में आपको निराशा ही हाथ लगेगी।
...इधर मेरा और महाराज दिग्विजय का इस प्रकार का वार्तालाप चल रहा था...

...उधर अपने शयनकक्ष में लेटी राजकुमारी चंद्रलेखा सोच रही थी...
श्यामदीन कितना साहसी व सुदर्शन युवक है। आज मैं उसके कारण ही जीवित हूं। मेरी एक-एक सांसों पर उसका हक है...

...वह प्रथम पुरुष है, जिसने मेरे शरीर का स्पर्श किया है। मेरे सम्पूर्ण शरीर का भार उसने अपनी बांहों में उठाया है।
...मन में यह ख्याल आते ही उसके गाल लाज से लाल हो उठे...

...मन ही मन कुछ निर्णय करके वह भगवान् कृष्ण की मूर्ति के समक्ष गई...
भगवन्, श्यामदीन ने एक तो मेरी जान बचाई है, दूसरे वह मेरे शरीर को स्पर्श कर चुका है। इसलिए मैं तुम्हें साक्षी बनाकर सौगंध खाती हूं कि मैं विवाह करूंगी तो श्यामदीन से ही करूंगी, अन्यथा आजन्म कुंवारी रहूंगी।

...अगले दिन प्रातः होते ही राजा दिग्विजय सिंह राजकुमारी चंद्रलेखा के पास पहुंचा...
बहन चंद्रलेखा, अब तुम युवा हो गई हो। इसलिए हम चाहते हैं कि तुम्हारे विवाह हेतु हम एक स्वयंवर का आयोजन करें और उसमें आस-पास के सभी राजकुमारों को आमंत्रित करें। तुम्हारी इस विषय में क्या राय है?

...दिग्विजय सिंह की बात सुनकर चंद्रलेखा चौंकी, फिर कुछ सोचकर उसने कहना चाहा...
भइया! इतनी जल्दी भी क्या है? फिर मैं...!
...घबराहट में चंद्रलेखा अपनी बात पूरी न कह सकी...

...उसकी ऐसी हालत देखकर दिग्विजय सिंह ने उससे कहा...
बहन चंद्रलेखा, क्या बात है? अपने विवाह की बात सुनकर तुम घबरा क्यों उठी? अरे, तुम क्षत्राणी हो। इसलिए तुम्हारे मन में जो भी कोई बात है, बिना डरे हमसे कहो।

...चंद्रलेखा कुछ झिझकी, फिर साहस करके बोली...
भइया, मैं नहीं चाहती कि मेरे विवाह के लिए किसी स्वयंवर का आयोजन हो।
लेकिन क्यों? विवाह के लिए स्वयंवर आयोजित करना तो हमारे कुल की परंपरा है।

तो सुनो भइया, मैं अपना वर ढूंढ़ चुकी हूं। इसलिए अब स्वयंवर की कोई आवश्यकता नहीं है।
कौन है वह, जिसे तुमने अपने लिए चुना है चंद्रलेखा?

भइया, वह रामदीन माली का बेटा श्यामदीन है।
कहीं वह श्यामदीन तो नहीं, जिसने कल तुम्हें सरोवर में डूबने से बचाया था?

आपने सही पहचाना भइया, मैं उसी श्यामदीन को पति के रूप में वरण करने की सौगंध खा चुकी हूं और उसी से विवाह करूंगी।
चंद्रलेखा, तुम होश में तो हो? एक माली के बेटे के साथ तुम्हारी शादी? यह कैसे हो सकता है? हम उच्च कुल के हैं। तुम्हारा विवाह केवल उच्च कुल में ही हो सकता है।
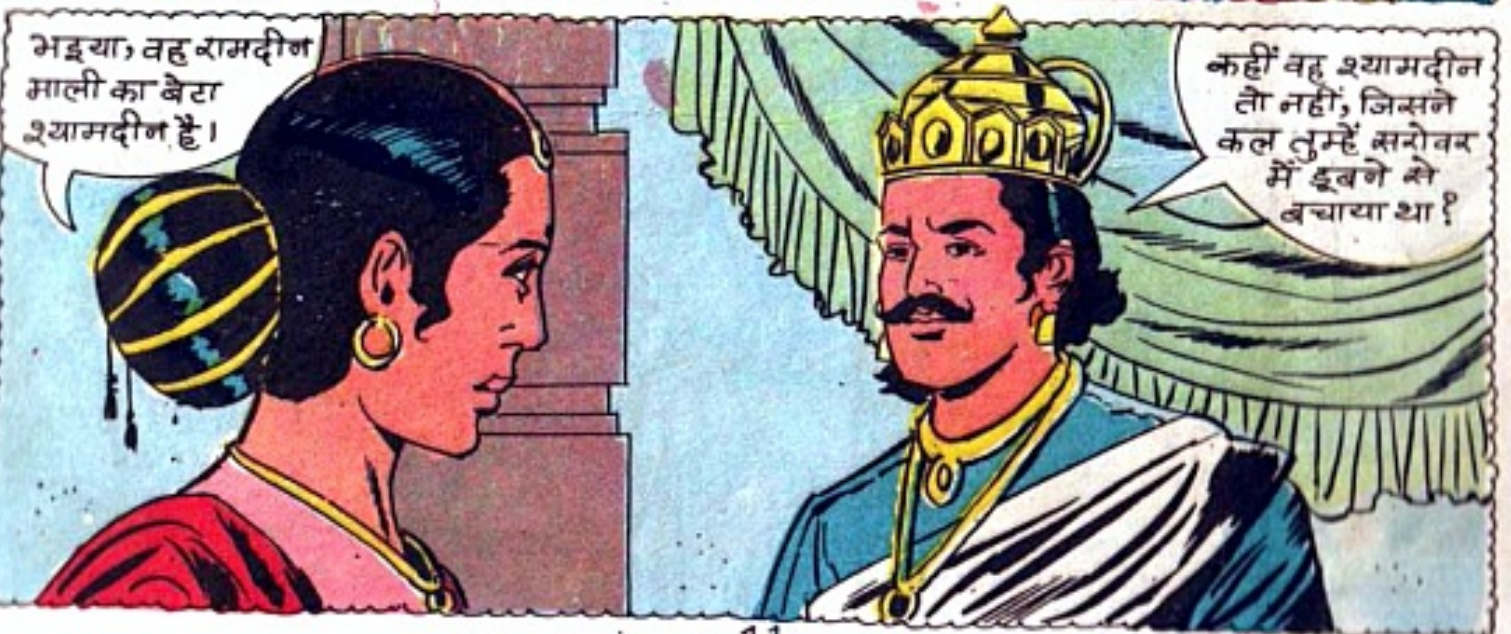
भइया, भारतीय नारी एक बार ही अपने पति का वरण करती है और वह मैं कर चुकी हूं। अब जो चाहे हो।
चंद्रलेखा, तुम बहुत उद्दंड हो गई हो? अगर तुमने सौगंध खाई है तो हम भी तुम्हें वचन देते हैं कि हम तुम्हारा विवाह श्यामदीन के साथ कभी नहीं होने देंगे।
...गुस्से से उबलते हुए राजा दिग्विजय सिंह कक्ष से बाहर निकल गए...

...अपने कक्ष में पहुंचते ही उन्होंने सोचा...
जैसे भी होगा, हमें चंद्रलेखा व श्यामदीन के विवाह को रोकना ही होगा इसी में हमारे कुल की लाज है।

...यह सोच उन्होंने उसी समय सेवक को बुलाकर आदेश दिया...
जाओ, रामदीन माली के बेटे श्यामदीन को बुलाकर ले आओ।
जो आज्ञा महाराज!
...सिर झुकाकर सेवक कक्ष से बाहर चला गया...

...रामदीन के घर पहुंचकर उसने श्यामदीन से कहा...
श्यामदीन, तुम्हें महाराज ने इसी समय महल में बुलाया है।
महाराज ने मुझे महल में बुलवाया है?
...श्यामदीन सोच में पड़ गया...

...तब रामदीन ने उससे कहा...
बेटा, कल तुमने राजकुमारी चंद्रलेखा को सरोवर में डूबने से बचाया था। शायद उसी बात से खुश होकर महाराज ने तुम्हें महल में बुलवाया है। वे तुम्हें कोई पुरस्कार देना चाहते होंगे।
पिताजी, पुरस्कार का तो मुझे कोई लालच नहीं है। पर जब महाराज ने मुझे बुलाया है तो जाना ही होगा।

...अतः श्यामदीन उसी समय सेवक के साथ महल की ओर चल दिया...
महाराज न जाने मुझे क्या पुरस्कार देंगे?

...कुछ देर बाद ही वह दिग्विजय सिंह के सामने खड़ा था...
तुम ही वह श्यामदीन हो, जिसने कल राजकुमारी चंद्र-लेखा की जान बचाई थी?
जी महाराज!

श्यामदीन, तुम्हें तो हमने राजकीय उद्यान की बागवानी व निगरानी के लिए नियुक्त नहीं किया हुआ है, फिर कल तुम राजकीय उद्यान में क्या करने गए थे?
महाराज, आपका कहना उचित है। राज-कीय उद्यान की बागवानी का काम मेरे पिता रामदीन के जिम्मे है...

... कल वे कुछ अस्वस्थ थे, इसलिए उनके स्थान पर मैं उद्यान की निगरानी कर रहा था कि तभी राज-कुमारी चंद्रलेखा जी के साथ वह जानलेवा हादसा घटित हो गया था।
श्यामदीन, बेशक तुमने राजकुमारी चंद्रलेखा की जान बचाकर हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है...

...पर इसके साथ ही तुमने एक अक्षम्य अपराध भी किया है। जिसकी सजा तुम्हें मिलेगी।
महाराज, क्या मैं जान सकता हूं कि वह अपराध कौन-सा है? और मुझे क्या सजा मिलने वाली है?
श्यामदीन, तुमने राजकुमारी के शरीर को स्पर्श किया है। जबकि हमारे घराने की परंपरा है कि यदि राजकुल के सदस्यों के अलावा अन्य पुरुष राजकुल की स्त्रियों को स्पर्श करता है तो उसे प्राणदंड दिया जाता है।
क्या...?
...श्यामदीन का मुख भय से पीला पड़ गया...

...यह देखकर...
श्यामदीन, हमें खेद है कि हम तुम्हें पुरस्कार के बदले में सजा-ए-मौत दे रहे हैं।
...दिग्विजय सिंह ने झटके से म्यान से तलवार निकाली...

...अगले ही पल...
खचाक
आह!
...श्यामदीन घायल हो कटे वृक्ष की तरह भूमि पर गिर पड़ा। और कुछ देर तड़पने के पश्चात शांत हो गया...

...उसे मृत देखकर दिग्विजय क्रूरता से मुस्करा उठा...
हो गया रास्ता साफ। न रहा बांस न बजेगी बांसुरी। अब न चंद्रलेखा श्यामदीन से विवाह करेगी और न ही हमारे कुल को कलंक लगेगा।

...दिग्विजय सिंह ने सेवकों को बुलाकर आदेश दिया...
इस लाश को जंगल में फेंक आओ।
जो आज्ञा महाराज!

...चंद्रलेखा को इस घटना का पता चला तो वह दौड़ी - दौड़ी दिग्विजय सिंह के पास आई...
भइया, यह आपने क्या किया? निर्दोष श्यामदीन को मौत के घाट उतार दिया।
चंद्रलेखा, तुम अपनी जिद पर अड़ी थी और हमें अपनी कुल की लाज की रखवाली करनी थी। अतः यह तो होना ही था। अब हम धूम-धाम से तुम्हारे स्वयंवर का आयोजन करेंगे।

भइया, आपको जो करना था आपने कर लिया। अब आपसे एक प्रार्थना है।
क्या?

आप मेरे स्वयंवर का आयोजन न करें। मैं श्यामदीन को अपना पति मान चुकी थी, अतः अब उसके निधन के पश्चात् उसकी विधवा के रूप में ही शेष जीवन काट डालूंगी।
चंद्रलेखा, लगता है तुम्हारी मति मारी गई है...

...न तो श्यामदीन के साथ तुम्हारा पाणिग्रहण संस्कार ही हुआ था और न ही तुमने उसके गले में वरमाला ही डाली थी, फिर वह तुम्हारा पति कैसे हो गया? चंद्रलेखा, अब हम तुम्हारी एक नहीं सुनेंगे और शीघ्र ही तुम्हारे स्वयंवर का आयोजन करेंगे।
भइया, हठ न करो। वरना...।

वरना...वरना क्या करोगी तुम?
उस अवस्था के आने से पहले ही मैं आत्मघात कर लूंगी।

चंद्रलेखा, कथनी और करनी में बड़ा अन्तर होता है। आत्मघात करना बड़े दिल-गुर्दे का काम है।
ठीक है भइया, अब मैं तुम्हें यही दिखाती हूं कि मेरे अन्दर कितना दिल-गुर्दा है?
अगले पल चंद्रलेखा ने अपने वस्त्रों में छिपी कटार निकाली...
...और...
खचाक
चंद्रलेखा!
आह!
दिग्विजय सिंह ने दौड़कर घायल चंद्रलेखा को अपनी बांहों में थाम लिया...
...तत्पश्चात...
चंद्रलेखा, यह तुमने क्या किया?
आह! भइया, अब तो आपको ...यकीन हो गया... होगा... कि क्षत्राणी की सौगंध कैसी होती है? मैंने... सिद्ध... कर दिया है... कि मैं कायर... नहीं हूं...।
चंद्रलेखा, मैंने ऐसा तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि तुम सचमुच आत्मघात कर लोगी। ऐसा करते हुए तुमने इस बात को जरा भी नहीं सोचा कि तुम्हारे आत्मघात से हमें कितना दुख पहुंचेगा?
भइया... निरपराध श्यामदीन को... मारते... समय... आपने सोचा था कि उसकी मौत से उसके बूढ़े माता-पिता को कितना दुःख होगा?
...सुनकर दिग्विजय का चेहरा शर्म से झुक गया...

...अगले ही पल उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। उसे मृत देखकर...

बहन...मेरी बहन...!

...दिग्विजय सिंह बहन के शव पर गिरकर फूट-फूटकर रो पड़ा...

पाप का प्रायश्चित्त ?
हां राजन्, राजकुमारी चंद्रलेखा और श्यामदीन को अलग करके आपने पाप किया है। उसके प्रायश्चित्त में आपको किसी निर्धन परिवार की कन्या के विवाह का खर्च उठाकर अपने हाथों से उसका कन्यादान करना होगा।

धर्मगुरु, मैं वचन देता हूं कि मैं ऐसा ही करूंगा। जब तक मैं ऐसा नहीं करूंगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।

...इस घटना के एक माह पश्चात् ही राजा दिग्विजय सिंह ने अपने राज्य की एक निर्धन कन्या का विवाह खूब धूम-धाम से किया...
...और उसका कन्यादान भी किया।

मृत्युंजय सिंह को इतनी बात बताने के पश्चात् धर्मगुरु चक्रपाणी आगे बोले-
राजन्, इस प्रकार राजा दिग्विजय सिंह के पाप का प्रायश्चित्त पूरा हुआ।
धर्मगुरु, उसके बाद क्या हुआ ?

राजन्, उसके बाद राजकुमारी चंद्रलेखा ने बरसों बाद राजकुमारी पारुल के रूप में आपकी बेटी के रूप में आपके कुल में जन्म लिया।
तो क्या हमारी बेटी पूर्वजन्म में राजकुमारी चंद्रलेखा थी ?

हां राजन्, परिस्थितियां तो यही कहती हैं। पचपन वर्ष बाद काली चील ने एक बार फिर राजकुल की स्त्री के हाथ में से कमल का फूल छीना है। अतः लगता है, राजकुल की कन्या पारुल एक बार फिर राजवंश से विद्रोह करके राजकुल से बाहर के किसी व्यक्ति के साथ विवाह करेगी ?
नहीं, यह कैसे हो सकता है ?

राजन्, बरसों पूर्व इस बात के जवाब में राजा दिग्विजय सिंह ने ऐसा ही कहा था।
धर्मगुरु, हम ऐसा नहीं होने देंगे।

तो क्या तुम भी राजा दिग्विजय सिंह की तरह पारुल को आत्मघात करने के लिए मजबूर करोगे राजन् ?
नहीं धर्मगुरु, मैं ऐसा तो नहीं करूंगा। पर हां, राजकुमारी पारुल को राजकुल के बाहर के किसी व्यक्ति के साथ विवाह भी नहीं करने दूंगा।

इसके लिए तुम क्या करोगे राजन् ?
सुनकर मृत्युंजय सोच में पड़ गया।

कुछ देर सोचकर उसने धर्मगुरु से कहा–
धर्मगुरु, मैं शीघ्र ही किसी राजकुमार के साथ राजकुमारी पारुल का विवाह कर दूंगा। जब तक उसका विवाह नहीं होता तब तक के लिए मैं उसे जल-महल में एकांत वास के लिए भेज दूंगा। वहां उस पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी...

...और उस महल के बाहर वह तभी निकलेगी, जब उसका विवाह होगा। इस प्रकार न वह राजकुल के बाहर के किसी व्यक्ति से मिलेगी, न उसका विवाह राजकुल से बाहर हो पाएगा।
राजन्, तुम भी राजा दिग्विजय सिंह की तरह अपने मन की करके देख लो...

...पर मुझे लगता है कि इस बार राजकुमारी चंद्रलेखा पारूल के रूप में अपनी सौगंध पूरी करके ही रहेगी।
नहीं धर्मगुरु, ऐसा न कहो। यदि ऐसा हुआ तो हमारे राजकुल की परंपरा धूल में मिल जाएगी।

मृत्युंजय सिंह ने उसी समय महारानी दुर्गावती को बुलाकर उसे सारी बातें बताते हुए कहा
महारानी हम चाहते हैं कि जलमहल में राजकुमारी पारूल के साथ तुम भी रहो, ताकि पारूल का मन लगा रह सके।
महाराज, राजकुल की परंपरा की रक्षा करने के लिए मैं सहर्ष ही उसके लिए तैयार हूं।

उसी शाम मृत्युंजय सिंह ने राजकुमारी पारूल से कहा—
बेटी पारूल, तुमने हमसे कई बार जलमहल देखने की जिद की है।
जी पिताजी महाराज, लेकिन आपने आज तक मेरी वह जिद पूरी नहीं की है।

बेटी, आज तुम्हारी वह जिद पूरी करने का दिन आ गया है।
सच पिताजी महाराज?
हां बेटी! चलो, आज हम तुम्हें जलमहल दिखा लाएं।
चलिए पिताजी महाराज।

मृत्युंजय उसी समय महारानी दुर्गावती व राजकुमारी पारूल के साथ रथ में बैठकर जलमहल की ओर चल दिया।

जब उनका रथ समुद्र तट पर जाकर रुका तो रात हो चुकी थी।
बेटी, वही है जल-महल।
ओह! कैसा सुंदर दृश्य है? समुद्र के पानी पर खड़ा जलमहल कितना अद्‌भुत लग रहा है?

रथ से उतरकर मृत्युंजय, दुर्गावती और पारुल के साथ तट पर खड़े जलपोत में सवार हो गया।
तत्पश्चात् जलपोत जलमहल की ओर चल पड़ा।

कुछ देर बाद ही जलपोत जलमहल के मुख्य व्दार के सामने जा लगा।
आओ बेटी!

मृत्युंजय ने जलमहल का मुख्य व्दार खोला। फिर तीनों ने महल में प्रवेश किया।

पारुल जलमहल की सुंदरता पर मुग्ध थी।
आहा! कैसी सुंदर मीना-कारी है?

महल के अन्दर पहुंचकर मृत्युंजय दुर्गावती से बोला—
महारानी, पारुल और तुम यहां पर रुको। मैं जरा महल के उद्यान में होकर आता हूं।
जी महाराज!
दोनों को वहां छोड़ मृत्युंजय वहां से वापस चल दिया।

कुछ देर बाद ही वह जलमहल के बाहर खड़ा उसके मुख्य द्वार पर ताला लगा रहा था।
महारानी को तो मेरी योजना के बारे में पता है, पर पारुल को सपने में भी गुमान नहीं होगा कि मैं जानबूझकर उसे जलमहल में कैद किये जा रहा हूं।
मुख्य द्वार पर ताला लगा व जलपोत में बैठ वह वापस समुद्र तट की ओर चल दिया।

जब काफी देर बीत जाने पर भी मृत्युंजय वापस नहीं लौटा तो पारुल घबराकर दुर्गावती से बोली—
मां, पिताजी महाराज न जाने कहां चले गए हैं? इस सूने महल में तो मेरा जी घबरा रहा है।
घबरा मत बेटी, महाराज अभी आते ही होंगे।

जब मृत्युंजय काफी देर तक वापस न लौटा तो महल में उसकी खोज करते-करते वे दोनों महल के मुख्य द्वार के पास जा पहुंचीं।
मुख्य द्वार तो बाहर से बंद है। इसे किसने बंद किया होगा? क्या महाराज हम दोनों को इस महल में जान बूझकर छोड़ गये हैं?
दुर्गावती ने बंद द्वार को देखकर चौंकने का शानदार अभिनय किया।

तब घबराई-सी पारुल उससे बोली—
मां, मुझे लगता है तुम्हारा अनुमान सही है। पिताजी महाराज हमें इस महल में छोड़ बाहर से ताला लगाकर यहां से चले गए हैं। अब क्या होगा मां?
कुछ नहीं होगा बेटी। संकट की इस घड़ी में मैं तुम्हारे साथ हूं। हम दोनों मां-बेटी मिलकर संकट का सामना करेंगे।
दुर्गावती के दिलासा देने से पारुल को कुछ हिम्मत-सी बंधी।

उस दिन से दुर्गावती व पारुल दोनों जलमहल में रहने लगीं। दोनों एक-दूसरे के सुख-दुःख बांटकर हंसी-खुशी दिन गुजारने लगीं। मृत्युंजय उन दोनों के लिए खाद्य सामग्री व जरूरत की अन्य वस्तुएं दासियों के द्वारा जलमहल में भिजवा दिया करता था। जलमहल में रहती हुई पारुल कभी-कभी सोचती—
पिताजी महाराज ने मुझे और मां को इस महल में एकांतवास की सजा क्यों दी है? आखिर हमारा कसूर क्या था?

एक रात्रि को जब दुर्गावती गहरी नींद सोई हुई थी—
न जाने क्यों आज मुझे नींद नहीं आ रही है? शय्या पर पड़े-पड़े करवट बदलने से तो अच्छा है कि महल की छत पर चल-कर थोड़ी देर घूमा जाए।
यह सोचकर वह उठी...

...और महल की छत पर जा पहुंची।
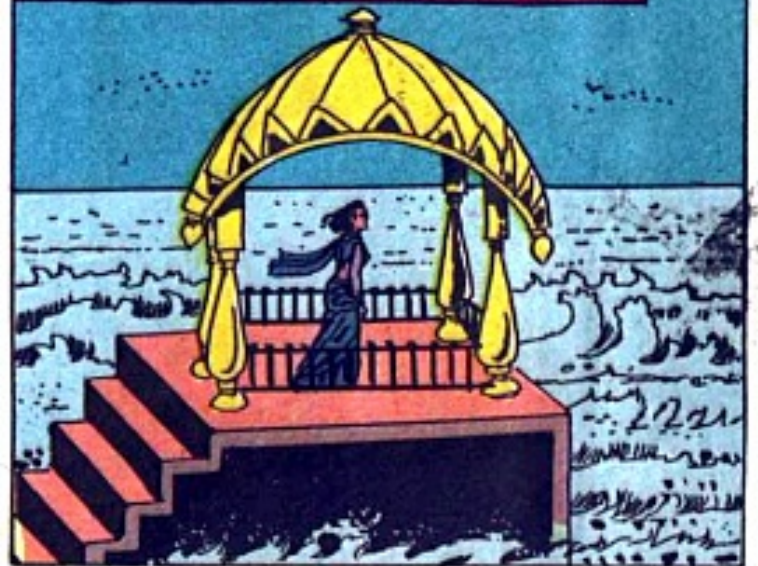
महल की छत पर घूमते हुए उसे अभी थोड़ा ही समय बीता था कि एक फड़फड़ाता हुआ पक्षी उसके पैरों के पास आ गिरा।
ओह, यह पक्षी तो घायल है?

पारुल झुकी...
...और पक्षी के पेट में धंसा तीर खींच लिया।

अगले ही पल पक्षी के स्थान पर एक दिव्य पुरुष खड़ा था।
क... क... कौन हो तुम ?
राजकुमारी पारुल, मुझसे डरो नहीं। मैं देवलोक का देव सात्यिकी हूं।

वह पक्षी कहां गया ?
राजकुमारी, वह पक्षी मैं ही था। पक्षी का रूप धारण करके मैं पृथ्वी लोक पर भ्रमण करने आया था। तभी एक शिकारी के तीर से मैं घायल हो गया...

... तुमने मेरे शरीर में धंसा तीर खींचकर मुझ पर बहुत उपकार किया है। यदि तुम तीर न खींचती तो मैं जीवन भर पक्षी बना पृथ्वी पर ही भटकता रहता।
ऐसा क्यों ?

देवलोक का जो भी देव पृथ्वी पर भ्रमण करने आता है, अपना वेश बदलकर ही पृथ्वी पर आता है। उस बदले हुए वेश में यदि वह किसी मनुष्य के तीर से घायल हो जाता है तो फिर जीवन भर उसी वेश में पृथ्वी पर भटकता रहता है। ऐसी अवस्था में वह अपने पुराने रूप में तभी वापस आ सकता है, जब कोई स्त्री उसके शरीर में धंसा तीर बाहर खींच ले।
ओह, तो यह बात है।

कुछ सोचकर पारुल ने देव सात्यिकी से पूछा—
देव सात्यिकी, मैंने सुना है कि देवगणों को भूत - वर्तमान व भविष्य तीनों कालों के बारे में पता रहता है। क्या यह बात सच है ?
तुमने ठीक सुना है राज-कुमारी पारुल।

तब देव सात्यिकी, कृपा करके मुझे यह बताइये कि मेरे पिता ने मुझे और मेरी मां को इस महल में क्यों कैद कर रक्खा है ?
अभी बताता हूं, राजकुमारी पारुल।
कहकर देव सात्यिकी ने आंखें मूंद लीं।

कुछ देर बाद जब उसने आंखें खोलीं–
राजकुमारी पारुल, तुम्हारा विवाह किसी राजकुमार से न होकर एक बढ़ई के बेटे प्रशांत के साथ होना है और तुम्हारे पिता नहीं चाहते कि ऐसा हो। इसी लिए उन्होंने तुम्हें इस महल में कैद किया हुआ है।
और उन्होंने मेरी मां को क्यों कैद किया है?

तुम्हारी मां कहां कैद है? वह तो स्वेच्छा से तुम्हारे साथ इस महल में रह रही है, ताकि इस वीरान महल में तुम किसी से बोल-बतला न सको।
ओह! तो यह बात है।
पारुल उदास हो उठी।

यह देखकर–
पारुल, इस प्रकार उदास न हो। शीघ्र ही तुम्हें इस जलमहल की कैद से छुटकारा मिलेगा।
वह कैसे देव सात्यिकी?

जैसे ही प्रशांत के साथ तुम्हारा विवाह होगा, तुम्हें जलमहल की कैद से छुटकारा मिल जाएगा।

लेकिन मेरा विवाह भला प्रशांत के साथ कैसे होगा? मैं तो यह भी नहीं जानती कि प्रशांत रहता कहां है? मैं इस महल की कैद से छूटकर उसके पास कैसे पहुंचूंगी?

तुम्हारे साथ चलूं ? लेकिन कहां ?
तुम चलो तो सही प्रशांत। तुम्हें अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं मिल जाएगा।

मंत्रमुग्ध-सा प्रशांत चारपाई से नीचे उतरा। तब उसका हाथ थाम देव सात्यिकी आकाश में उड़ चला।
ओह, कैसा रोमांचक दृश्य है ? मैं पक्षियों की भांति आकाश में उड़ा जा रहा हूं।

शीघ्र ही प्रशांत के साथ देव सात्यिकी जलमहल की छत पर खड़ी पारुल के सामने आ उतरा।
राजकुमारी पारुल, यही प्रशांत है।
तो यही मेरा होने वाला पति है ?

अब देव सात्यिकी ने प्रशांत से कहा—
प्रशांत, तुम हरिजनगर राज्य की राजकुमारी पारुल के सामने खड़े हो। राजकुमारी पारुल तुम्हारी होने वाली पत्नी है।
क्या ?

हां प्रशांत! तुम्हें राजकुमारी पारुल से विवाह करने में कोई एतराज तो नहीं है ?
एतराज कैसा ? यह तो मेरा सौभाग्य होगा।

तब देव सात्यिकी ने हवा में हाथ लहराया।

अगले ही पल–
ओह! देव सात्यिकी के हवा में हाथ घुमाते ही महल की छत पर विवाह का मंडप बन गया है।

देव सात्यिकी ने पुनः हवा में हाथ लहराया तो पारुल व प्रशांत के शरीर पर विवाह के वस्त्र आ गए।
अरे!
अरे!

तब देव सात्यिकी के निर्देश पर पारुल व प्रशांत ने अग्नि के सात फेरे लिए।

तत्पश्चात्–
देव सात्यिकी, हमें आशीर्वाद दो।
आज से तुम दोनों पति-पत्नी हो। मेरा आशीर्वाद सदा तुम दोनों के साथ रहेगा।

पारुल और प्रशांत, भोर होने वाली है। अब मैं देवलोक वापस जाऊंगा। तुम दोनों भी नीचे जाकर महारानी दुर्गावती से आशीर्वाद लो।

इतना कह देव सात्विकी आकाश में उड़ गया।

तब पारुल प्रशांत को ले अपने शयनकक्ष में पहुंची।
मां उठो, देखो कौन आया है?

पारुल के जगाने पर दुर्गावती ने आंखें खोलीं, लेकिन प्रशांत को उसके समीप खड़े देख वह चौंकी–
पारुल के साथ यह युवक कौन है? यह इस महल में कैसे आया?

उसने आश्चर्य से पारुल की ओर देखा–
पारुल, यह युवक कौन है?
मां! ये तुम्हारे दामाद और मेरे पति प्रशांत हैं।

दुर्गावती को लगा जैसे भूचाल आ गया हो।
क्या कह रही हो पारुल?
मैं सच कह रही हूं मां।
तब पारुल ने विस्तारपूर्वक दुर्गावती को अपने विवाह के बारे में बताया।

सारी बात जानकर—
जिस बात से बचने के लिए महाराज ने तुम्हें इस महल में कैद किया था, आखिर वही बात होकर रही।
दुर्गावती बुरी तरह परेशान हो उठी।

यह देखकर—
मां! क्या आप हम दोनों को अपना आशीर्वाद नहीं देंगी?
आशीर्वाद तो तुम दोनों को देना ही होगा।
तब पारुल और प्रशांत ने आगे बढ़कर दुर्गावती से आशीर्वाद लिया।

तत्पश्चात् दुर्गावती पारुल से बोली—
बेटी, अब जलमहल में रहने से कोई फायदा नहीं है। आओ, अब हमें हरिनगर लौट चलना चाहिए।
मां, जलमहल से बाहर हम लोग कैसे जा सकते हैं? महल का मुख्य द्वार तो बाहर से बन्द है।

पारुल, इस महल के नीचे एक गुप्त रास्ता है। जो समुद्र के नीचे से होकर उसके तट पर जाकर खुलता है। महाराज ने ही मुझे उस गुप्त रास्ते के विषय में बताया था।

तब दुर्गावती, पारुल व प्रशांत के साथ उस गुप्त रास्ते में उतर गई।
शीघ्र ही वे सब समुद्र तट पर जा निकले।

फिर तीनों पैदल ही हरिनगर की ओर चल पड़े।

हरिनगर पहुंचकर दुर्गावती पारुल और प्रशांत को लेकर एक सराय में पहुंची।
तुम दोनों इस सराय में ही रुको। मैं महल में जाकर महाराज को पहले सारी स्थिति से अवगत करा कर उन्हें समझाऊंगी, तत्पश्चात् तुम्हें यहां से ले जाऊंगी।
उन दोनों को सराय में छोड़ दुर्गावती महल की ओर चल दी।

जब वह मृत्युंजय सिंह के पास पहुंची—
महारानी तुम...? पारुल कहां है? तुम उसे जलमहल में छोड़कर यहां क्यों चली आई?
तब दुर्गावती ने उसे विस्तारपूर्वक सारी बात बताई।

सारी बात जानकर—
मैं पारुल और बढ़ई के लड़के प्रशांत को छोड़ूंगा नहीं महारानी! पारुल ने प्रशांत से विवाह करके हमारे कुल को कलंक लगाया है। तुम जल्दी से मुझे उस सराय में ले चलो। महारानी! मैं उन दोनों को मौत के घाट उतारूंगा।
महाराज, गुस्सा थूक दीजिए! पारुल और प्रशांत को मौत के घाट उतारने से अब कुछ हासिल नहीं होगा...

... जरा यह तो सोचिए महाराज, पारुल को आपने उस जल-महल में रख छोड़ा था, जहां आदमी तो क्या कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता था। फिर भी वही होकर रहा, जो पारुल के भाग्य में लिखा था।
हां, यह तो तुम ठीक कह रही हो महारानी!

तब मेरी एक बात मानिये महाराज। जाति से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है। छोटा बड़ा तो मनुष्य को उसके कर्म बनाते हैं। इसलिए गुस्सा थूककर अपने दामाद का स्वागत करने मेरे साथ सराय में चलिए और बेटी-दामाद को सादर महल में लेकर आइए।
हां, अब तो यही करना होगा।
दुर्गावती के साथ सराय जाकर तब मृत्युंजय, प्रशांत और पारुल को खुशी-खुशी महल में ले आया।
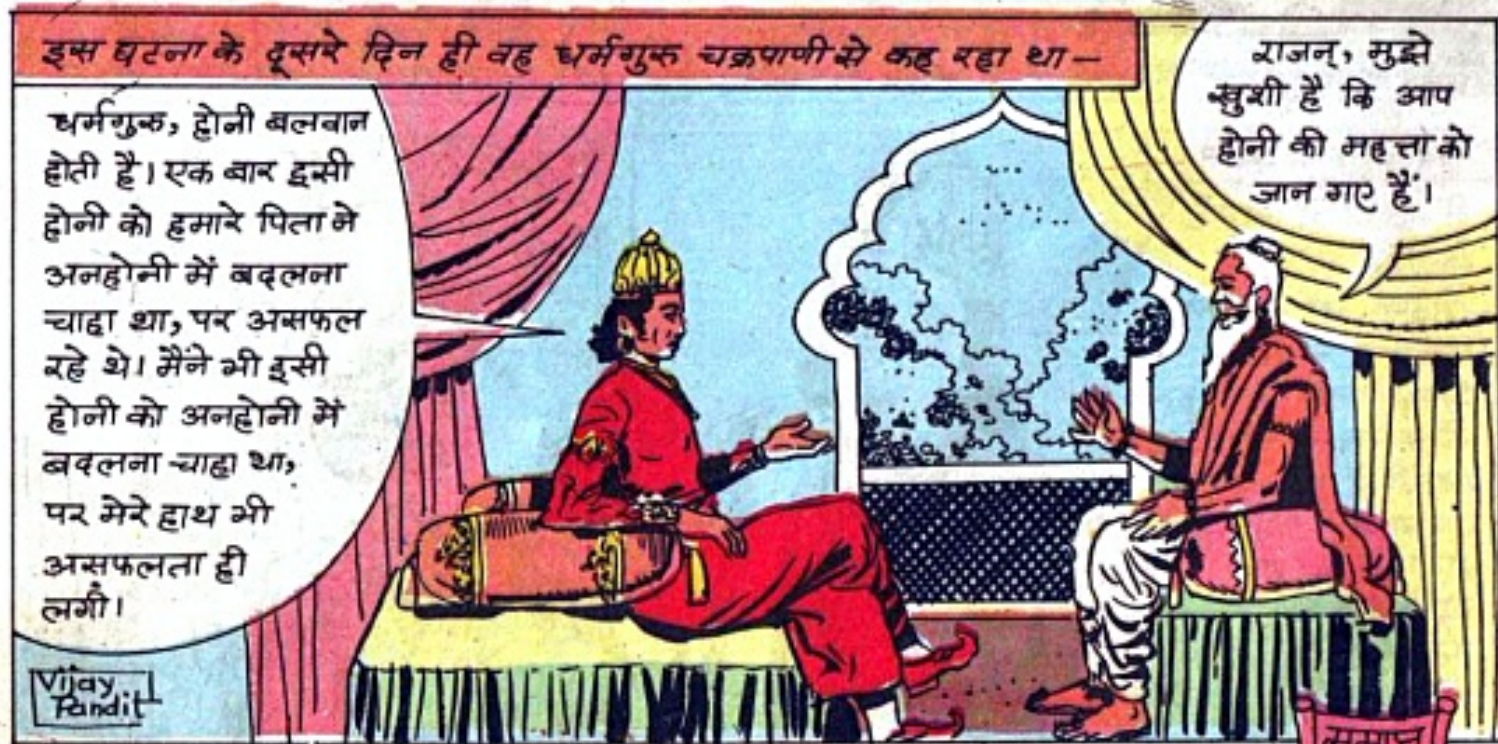
इस घटना के दूसरे दिन ही वह धर्मगुरु चक्रपाणी से कह रहा था—
धर्मगुरु, होनी बलवान होती है। एक बार इसी होनी को हमारे पिता ने अनहोनी में बदलना चाहा था, पर असफल रहे थे। मैंने भी इसी होनी को अनहोनी में बदलना चाहा था, पर मेरे हाथ भी असफलता ही लगी।
राजन्, मुझे खुशी है कि आप होनी की महत्ता को जान गए हैं।
Vijay Pandit
समाप्त

तबाही का

मौत बेचने वाले

भारत के बेटे

राम-रहीम
अपने देश के

कानून का
शिकंजा

मौत का फूल

लोहे का शैतान

शैतानों का

राम-रहीम
भूतमहल